ज्ञानरंजन : "घंटा"

"घंटा" कहानी ज्ञानरंजन की प्रसिद्ध कहानियों में से एक कहानी है। इस कहानी में आज की लोकतंत्रीय व्यवस्था की बातें और उनके अंदर की वास्तविक हालातों को सामने रखते हुए समाज के खोखलेपन को उजागर किया है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि इस लोकतांत्रिक व्यवस्थित समाज में उपर से देखने में गहरी शांति मिलती है पर भीतर चुपचाप बौद्धिक जुगाली करते हुए लोग हैं। इसी वर्ग के नवजवानों का पेट्रोला है, यह अपनी तबाही पर गाली देते हुए, लोगों की जमात है, इसी जमात का यह क्लब है। जबकि दूसरी तरफ रंगीन लाईटों और म्यूजिक से झनझनाता शानदान क्लब व्यवस्था के रखवालों की जमात है। पेट्रोला काफी अंदर धँसकर था। दर्जी की दुकान, साइकिल स्टैण्ड और मोटर ठहराने के स्थान को लाँघकर वहाँ पहुँचा जाता था। वह काफी अज्ञात जगह थी, उसे केवल पुलिस अच्छी तरह जानती थी। शायद इसलिए कि इन्हीं लोगों से लूट–पाट का अंदेशा हो सकता है या इन्हीं लोगों से इस व्यवस्था की शांति को खतरा हो सकता है। इसी पेट्रोला में अधिकांश बेहाल नौजवान लोग थे, जो जिंदगी की सही तलाश चाहते थे।"

कहानी का नायक भी पेट्रोला में उठने–बैठने वालों में से है। नायक निम्नमध्यवर्ग का लेखक है। अभी उसके सपने बन रहे थे। वह अपनी प्रसिद्धि के लिए पेट्रोला को छोड़कर व्यवस्था का आदी बन सकता था,

मगर वह अभी व्यवस्था में लिपट नहीं पाया था, बल्कि उसे थोड़ी सी खरोंच ही आ पायी थी। अर्थात् वह अपने लाभ के लिए लार टपकाने लगता है। नायक और दो लालचों के बीच अंतर्विरोध कम नहीं थे। उसकी संवेदना के विकास के बजाए उसकी चालाकियाँ बढ़ रही थी। लेकिन शायद उसमें कुछ संस्कार ही थे जो पता नहीं उसके इन आचरणों पर एक तरह की आंतरिक झिझक उत्पन्न कर रहे थे। नायक एक ओर इस व्यवस्था को नापसंद करता है तो दूसरी तरफ चमकीले माहौल में घुस कर शराब पीना चाहता है। मगर अनिच्छा की स्थिति में रहता है। चमकीलेपन में एक मित्र से उसकी मुलाकात होती है। जिसका नाम नेम है।

नेम भी कभी पेट्रोला का सदस्य था। वही एक ऐसा व्यक्ति है जो उच्च वर्ग के कुंदन सरकार से नायक का परिचय कराना चाहता है ताकि वह भी कुंदन सरकार के साथ शीशा चमकाता रहे। कुंदन सरकार काफी झनकता हुआ नाम था। शहर के तमाम लेखक और बुद्धिजीवी उस तक पहुँच चुके थे। नायक एक मध्यवर्गीय लेखक हैं और कुंदन सरकार ऐसे पद पर था, जहाँ रह कर आमतौर पर जनता के निकट नहीं रहा जा सकता था। इसके बावजूद वह एक बेजोड़ सामाजिक प्राणी था। सरकार को पता नहीं कैसे उसने बेवकूफ बना रखा था। उसे साहित्यिक व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों से बातचीत करने, उनके बीच घुलने–मिलने और उन्हें शराब पिलाने की तमन्ना रहती थी। इसलिए नेम भी अपने प्रपंचपूर्ण

व्यवहार से नायक की आंतरिक लालसा को पहचानने में सफल होता है और नायक इस महंगी शराब के लालच में कुंदन सरकार का "घंटा" बन जाता है। वह चुपचाप कुंदन सरकार के साथ क्लब जाने लगता है। यह बात वह अपने पेट्रोला के साथियों से छिपा लेता है। महंगी शराब पीने की लालसा ही उसे कुंदन सरकार जैसे बुद्धिजीवी के करीब ले जाकर खड़ा कर देती है। कुंदन सरकार एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनके लिए साहित्य केवल उछलकुद है, जिसमें केवल मनोरंजन के लिए लेखक बड़ी–बड़ी छलांगें लगाता है। कुंदन सरकार साहित्य को किस तरह लेता है या उसे साहित्य से क्या और कितना लेना–देना है। यह बात उसकी चालाकी और चतुराई भरे वाक्यों से पता चलती है–"मुझे सच्चाई खूबसूरत लगती है और मैं सत्य इक्ट्ठा कर रहा हूँ।"

साहित्य संबंधी अश्लीलता नायक के बर्दाश्त के बाहर थी। मगर महंगी शराब ने उसके मुख को गोंद की तरह चिपका दिया था। अपनी मुस्कान के माध्यम से अपनी ही जुबान में काँटे महसूस करता है। उसकी मुस्कान में एक आग जलती है। इसकी वजह से आग में जलते–भुनते सीधा एक बड़े रेस्त्राँ में जाता है जहाँ बड़े–बड़े अफसर, उच्च वर्ग के लोग उपस्थित होते हैं। वहाँ जाकर उसे लगता है कि यहाँ कोई गुस्सैल, गंभीर या दुःखी नजर नहीं आ रहा है। सब–के–सब स्वस्थ और चिकने चेहरे नजर आते हैं। नायक रेस्त्राँ में बैठे लोगों के बीच चुपचाप बैठता तो है

लेकिन उस उँच समाज पर कभी हँसता है कभी सोचता है। नृत्य करती हुई लड़की का गंदा नाच दिखाने पर उसे घुड़क देता है, गुस्सा जाहिर करता है और अंततोगत्वा वह अपनी असलियत पर उतर आता है।

वास्तव में आदमी जब अपने ही भरण–पोषण का गुलाम बन जाता है, यानी पेट भरने के लिए उचित अनुचित का बोध खोकर जीता है तब वह आदमी नहीं जानवर हो जाता है। गुस्से में नायक की मुट्ठी अपने आप जकड़ गई। वह आपे से बाहर हो गया। कोका–कोला की बोतल मुट्ठी से बाहर हो जाती है। इस रौद्र अवतार को देखकर वहाँ बैठे उँचे समाज के स्वस्थ चिकने चेहरों पर बल पड़ता है। नायक की इन हरकतों की वजह से उसे बाहर फेंक दिया जाता है और व्यवस्था यथावत चलने लगती है। नायक अपनी सोच और सानिध्य के बलबूते पर पुराने अड्डे पर लौट आता है। इस तरह कुंदन सरकार का घंटा उतार फेंककर वह वापस अपनी पुरानी जिंदगी में लौट आता है। इस तरह यह कहानी मनुष्य के अपने मूल से जुड़े रहने का बोध कराती है।